

ब्याज का सिद्धान्त

Dr. Amitendra Singh
Economics Department
Govt. Girls PG College, RJPM Lucknow
E mail-amitendra82@gmail.com.in

ब्याज का सिद्धान्त

- ▶ कुल ब्याज तथा शुद्ध ब्याज
- ▶ मार्शल या प्रतिष्ठित ब्याज का सिद्धान्त
- ▶ ऋण योग्य कोष सिद्धान्त या नव-परम्परावादी सिद्धान्त
- ▶ ब्याज का तरलता पसन्दगी सिद्धान्त
- ▶ तरलता जाल
- ▶ कीन्स के सिद्धान्त की प्रतिष्ठित सिद्धान्त से श्रेष्ठता

कुल ब्याज तथा शुद्ध ब्याज

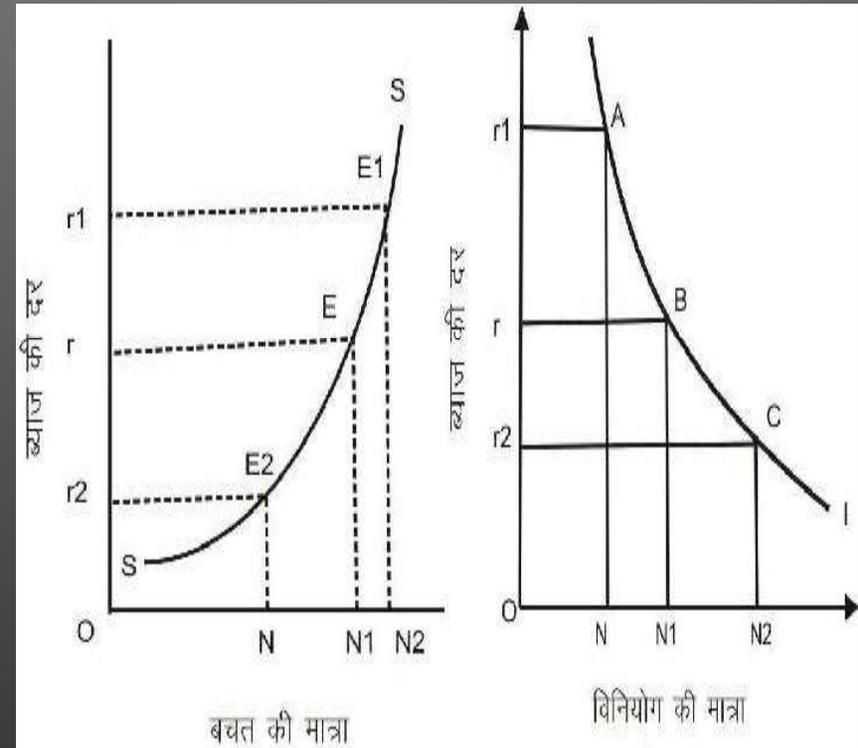
- ▶ ऋणदाता ऋणी से जो आय वसूल करता है, वह सारी की सारी शुद्ध ब्याज नहीं होती। इस आय को कुल ब्याज कहना अधिक उपयुक्त होगा। शुद्ध ब्याज के अलावा कुल ब्याज में और भी बहुत से भुगतान सम्मिलित होते हैं। कुल ब्याज में चार मुख्य तत्व पाये जाते हैं: (1) शुद्ध ब्याज-शुद्ध ब्याज तो पूंजी को उधार देने का पुरस्कार है। (2) जोखिम के विरुद्ध बीमा - कुल ब्याज का एक अंश उस जोखिम का भुगतान होता है जो ऋणदाता द्वारा ऋण देते समय उठाया जाता है। ऋण देते समय जितना जोखिम कम होता है, उतना ही ब्याज दर कम होती है। (3) असुविधा का भुगतान - ऋण देते समय ऋणदाता को असुविधा का अनुभव होता है उदाहरणार्थ, यदि ऋणदाता पाँच वर्ष के लिए अपना धन उधार देता है तो इस अवधि के बीच उसका धन अवरूद्ध हो जाता है। वह इस धन का अपने लिए कोई प्रयोग या निवेश नहीं कर सकता है। वह निवेश की इस असुविधा के कारण शुद्ध ब्याज में 1 अथवा 2 प्रतिशत की वृद्धि कर देता है। ऐसा करके वह अपनी असुविधा की क्षतिपूर्ति कर लेता है। (4) प्रबन्धक का पारिश्रमिक - प्रत्येक ऋण दाता को ऋण-प्रबन्ध पर कुछ न कुछ व्यय करना पड़ता है। उदाहरणार्थ, ऋणदाता को प्रत्येक ऋणी के लिए अलग से खाता खोलना पड़ता है और समय-समय पर उसकी देखभाल करनी पड़ती है। यह भी सम्भव है कि ऋण वापस लेने से पूर्व उसे कई बार ऋणी का दरवाजा खटखटाना पड़े। इन सभी के कारण ऋणदाता को अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है और वह शुद्ध ब्याज में 1 अथवा 2 प्रतिशत की वृद्धि करके अपनी क्षतिपूर्ति कर लेता है। इस तरह हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कुल ब्याज में से यदि तीनों भुगतानों (अर्थात् जोखिम का भुगतान, असुविधा का भुगतान तथा प्रबन्ध का भुगतान) को घटा दिया जाये तो शेष शुद्ध ब्याज बच रहेगा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पूर्ण प्रतियोगी बाजार में ऋणियों एवं ऋणदाताओं के बाजार के बारे में पूर्ण जानकारी होती है। परिणामतः समूचे बाजार में शुद्ध ब्याज की दर समान होती है। हमारे अध्ययन का सम्बन्ध शुद्ध ब्याज से है न कि कुल ब्याज से।

मार्शल या प्रतिष्ठित ब्याज का सिद्धान्त अथवा ब्याज का बचत-निवेश सिद्धान्त

अथवा

ब्याज का माँग-पूर्ति सिद्धान्त

ब्याज दर (Rate of Interest)	बचत पूर्ति (Supply of Savings)	बचत माँग (Demand for Savings)
5%	500	100
4%	400	200
3%	300	300
2%	200	400
1%	100	500



आलोचनाएँ

- ▶ **पूर्ण रोगार की मान्यता** : यह सिद्धान्त पूर्ण रोजगार की गलत मान्यता पर आधारित है, जबकि वास्तविक जीवन में अपूर्ण रोजगार की स्थिति पायी जाती है।
- ▶ **बचत तथा निवेश पर ब्याज का प्रभाव** : प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के अनुसार बचत और निवेश दोनों ही ब्याज दर पर निर्भर करते हैं। कीन्स इस बात से सहमत नहीं हैं। कीन्स के अनुसार बचत ब्याज दर की अपेक्षा प्रमुख रूप से राष्ट्रीय आय पर ही निर्भर करती है और निवेश ब्याज दर की अपेक्षा प्रमुख रूप से पूँजी की सीमान्त उत्पादकता पर निर्भर करता है।
- ▶ **बचत और निवेश में सन्तुलन**: प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के अनुसार बचत और निवेश में सन्तुलन ब्याज दर के माध्यम से होता है। परन्तु कीन्स के अनुसार यह सन्तुलन ब्याज दर की अपेक्षा आय में होने वाले परिवर्तनों के माध्यम से होता है।
- ▶ **पूँजी की संकुचित धारणा** : प्रतिष्ठित विचारधारा के अनुसार केवल वर्तमान आय से प्राप्त होने वाली बचत को ही पूँजी में सम्मिलित किया जाता है। जबकि पिछली संचित राशि और बैंक साख दोनों ही पूँजी की पूर्ति के प्रमुख स्रोत हैं।
- ▶ **अनिर्धारित सिद्धान्त** : कीन्स के अनुसार ब्याज दर बचत की पूर्ति और बचत की माँग की सापेक्षिक शक्तियों पर निर्भर करती है। जब तक ब्याज का पता न हो बचत और निवेश निर्धारित नहीं किया जा सकता और जब बचत और निवेश ही निर्धारित नहीं होंगे तो ब्याज दर किस प्रकार निर्धारित होगा ? अतः यह ब्याज का एक अनिर्धारित सिद्धान्त है।
- ▶ **उपभोग और निवेश सम्बन्ध की उपेक्षा**: इस सिद्धान्त में उपभोग के प्रभाव को बिल्कुल छोड़ दिया गया है। कीन्स का कहना है कि जब उपभोग माँग कम होती है तो अर्थव्यवस्था की समग्र माँग भी कम होती है। समग्र माँग कम होने से निवेश के लिए प्रोत्साहन भी कम होता है।
- ▶ **वास्तविक सिद्धान्त** : इस सिद्धान्त में ब्याज दर को निर्धारित करने वाले केवल वास्तविक तत्वों को ही शामिल किया गया है। जैसे उत्पादकता, त्याग, प्रतीक्षा, समय अधिमान आदि। मौद्रिक तत्वों की उपेक्षा की गयी है। कीन्स ने अपने ब्याज दर सिद्धान्त में मौद्रिक तत्वों को ही शामिल किया है।

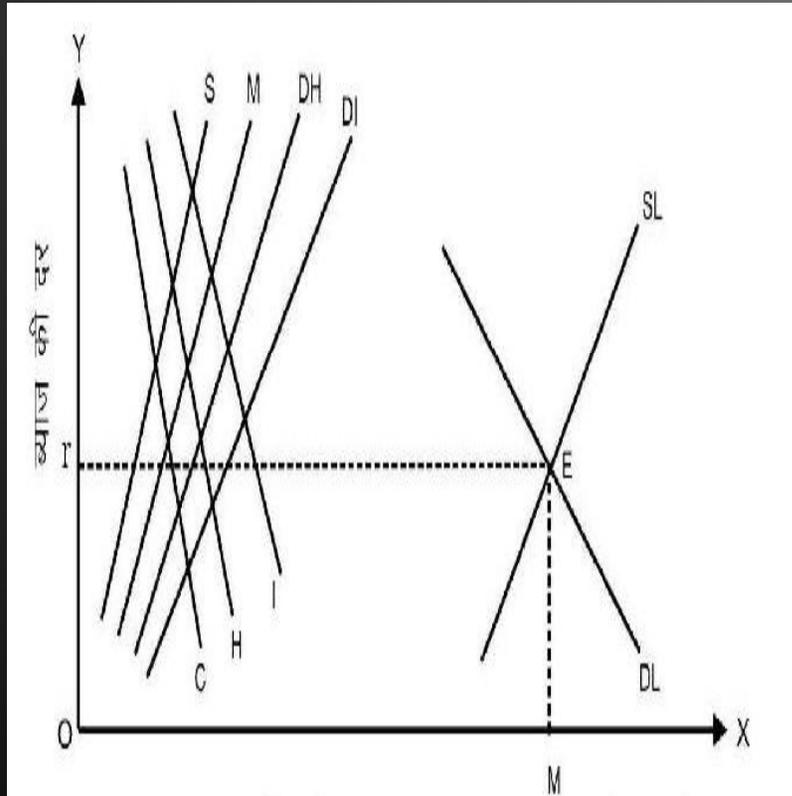
मुद्रा निष्क्रिय प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों मान्यता मुद्रा निष्क्रिय अर्थात् मुद्रा

ऋण योग्य कोष सिद्धान्त या नव-परम्परावादी सिद्धान्त

- ▶ ऋण योग्य कोष की पूर्ति
- ▶ बचत
- ▶ बैंक
- ▶ असंचय
- ▶ अनिवेश या विनिवेश
- ▶ ऋण योग्य कोष की पूर्ति
- ▶ $SL = S + M + DH + DI$
- ▶ $SL =$ Supply of Loanable Funds (ऋण योग्य कोष की पूर्ति)
- ▶ $S =$ Saving (बचत)
- ▶ $M =$ Bank Credit (बैंक साख)
- ▶ $DH =$ Dishoarding (अपसंचय)
- ▶ $DI =$ Dis-investment (अनिवेश)

- ▶ ऋण योग्य कोषों की कुल मांग = $I + C + H$
- ▶ यहाँ $DL =$ Demand for Loanable Funds ऋण योग्य कोषों की कुल मांग
- ▶ $I =$ Investment (निवेश)
- ▶ $C =$ Consumption उपभोग)
- ▶ $H =$ Hoarding (संचय)
- ▶ साम्य की स्थिति में,
- ▶ $S_L = D_L$
- ▶ ऋण योग्य कोष की पूर्ति त्र ऋण योग्य कोष की मांग
- ▶ $S + M + DH + DI = I + C + H$
- ▶ $S + M = (I - DI) + (H - DH) + C$
- ▶ अर्थात्, बचत + बैंक मुद्रा = निबल निवेश + निबल संचय + उपभोग
- ▶ $(S - C) + M = (I - DI) + (H - DH)$
- ▶ अर्थात्, शुद्ध बचत + बैंक मुद्रा = निबल निवेश + निबल संचय
- ▶ या **Net Saving + Bank Credit = Net Investment + Net Hoarding**

ऋण योग्य कोष सिद्धान्त या नव-परम्परावादी सिद्धान्त



- ▶ (1) संचय की गलत धारणा : प्रो० कीन्स के अनुसार अर्थव्यवस्था में मुद्रा की कुल पूर्ति स्थिर होती है अतः यदि एक व्यक्ति मुद्रा का संचय अधिक करता है तो दूसरे व्यक्ति कम करेगा। क्योंकि कुल संचय की मात्रा में परिवर्तन नहीं हो सकता। यह परिवर्तन व्यक्तिगत दृष्टिकोण से सम्भव है परन्तु सामूहिक दृष्टि से नहीं। परन्तु प्रो० हॉम का कहना है कि मुद्रा के बेग में परिवर्तन होने के कारण संचय की मात्रा में भी परिवर्तन सम्भव है।
- ▶ (2) पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता: प्रो० कीन्स ऋण योग्य कोष सिद्धान्त को भी पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता पर आधारित होने के कारण अव्यवहारिक मानते हैं।
- ▶ (3) वास्तविक एवं मौद्रिक तत्वों का मिश्रण : आलोचकों के अनुसार इस सिद्धान्त में वास्तविक एवं मौद्रिक तत्वों को शामिल किया गया है। जबकि ये दोनों तत्व भिन्न-भिन्न हैं। जिससे इनका विभिन्न चर मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अलग-अलग अध्ययन किया जाना चाहिए।
- ▶ (4) अनिर्धारणीय सिद्धान्त : ऋण योग्य कोष आय तथा निवेश स्तर पर निर्भर करते हैं और निवेश स्तर ब्याज दर पर निर्भर करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ऋण योग्य कोषों की पूर्ति एवं मांग की सापेक्षिक शक्तियाँ ब्याज निर्धारण है।

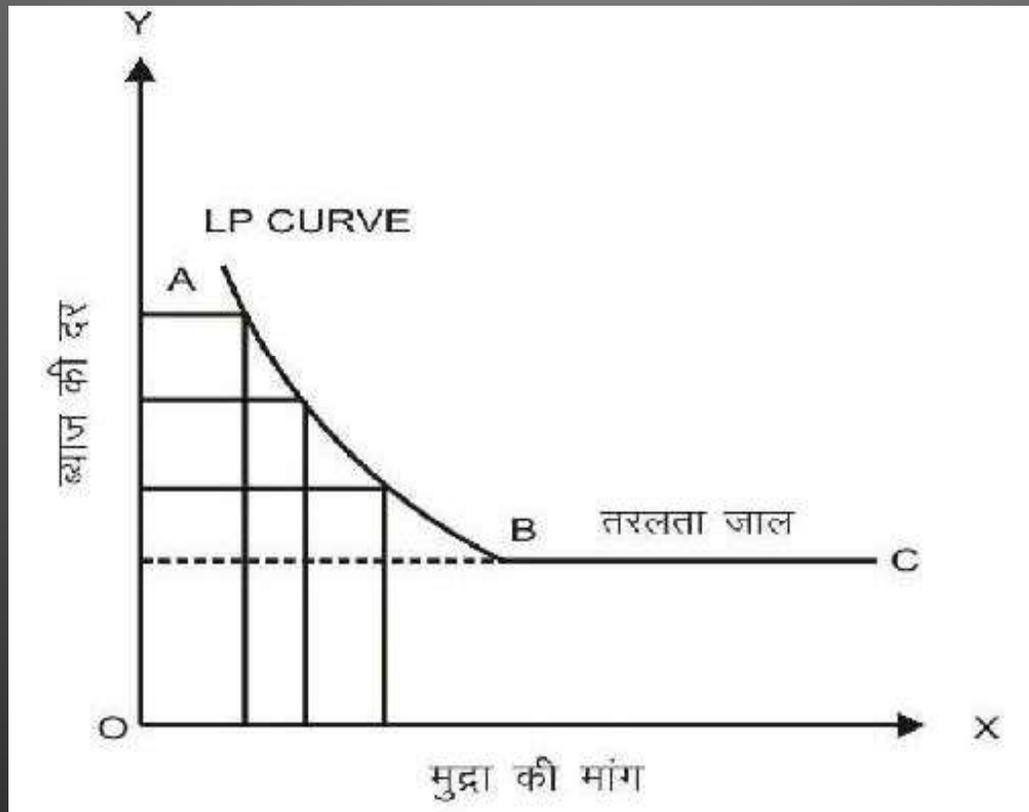
ब्याज का तरलता पसन्दगी सिद्धान्त

- ▶ इस सिद्धान्त का प्रतिपादन प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जे.एम. कोन्स द्वारा 1936 में अपनी पुस्तक "General Theory of Employment, Interest and Money" में किया गया है। कोन्स के अनुसार ब्याज दर पूर्णतः एक मौद्रिक घटना है। उनके अनुसार ब्याज की दर मुद्रा का पूर्ति एवं मांग की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।
- ▶ कोन्स के अनुसार, "ब्याज वह कीमत है जो कि धन की नकद रूप में रखने की इच्छा तथा प्राप्त नकदी की मात्रा में समानता स्थापित करती है।"

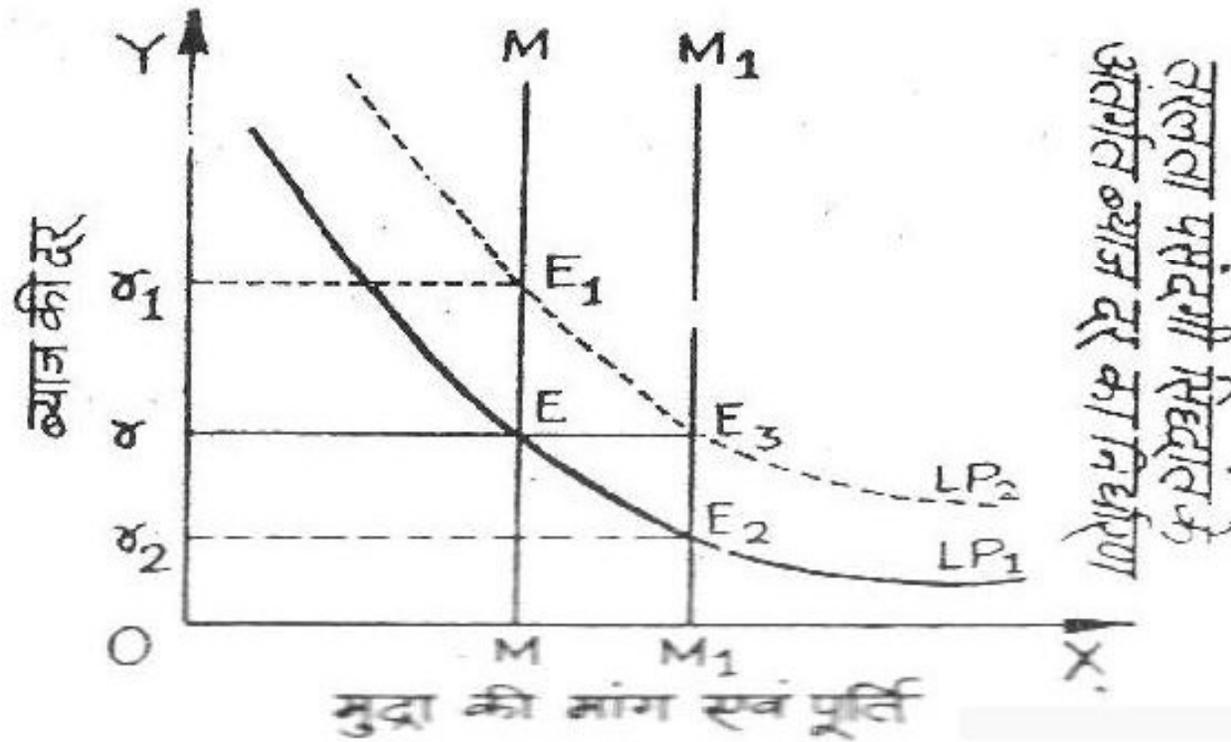
- ▶ **मुद्रा की मांग**
- ▶ **सौदा उद्देश्य**
- ▶ आय तथा रोजगार का स्तर : देश में आय, उत्पादन एवं रोजगार का स्तर जितना अधिक होगा क्रय-विक्रय के लिए नकद मुद्रा की मांग उतनी ही अधिक होगी। कीमतें तथा मजदूरी बढ़ जाने से भी क्रय-विक्रय के लिए नकदी की मांग बढ़ जाती है।
- ▶ आय प्राप्ति की आवृत्ति : नकदी की मांग आय के परिणाम पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि आय कितने अन्तराल के बाद प्राप्त हो रही है। आय प्राप्ति की आवृत्ति में वृद्धि के साथ सौदा उद्देश्य के लिए नकद की मांग बढ़ जाती है।
- ▶ व्यय की अवधि: व्यय की अवधि भी नकदी की मांग को प्रभावित करती है। खर्चों का भुगतान जितनी लम्बी अवधि के बाद किया जायेगा उतनी ही दैनिक क्रय-विक्रय के लिए धन की मांग कम होगी।
- ▶ **दूरदर्शिता उद्देश्य**
- ▶ **सट्टा उद्देश्य**
- ▶ कुल मुद्रा की मांग या तरलता पसन्दगी = (सौदा उद्देश्य + दूरदर्शिता उद्देश्य)
- ▶ = सौदा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग + सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग
- ▶ $L = L_1 + L_2$
- ▶ $f(Y) + f(r) \cdot kL = f(Y, r)$

तरलता जाल

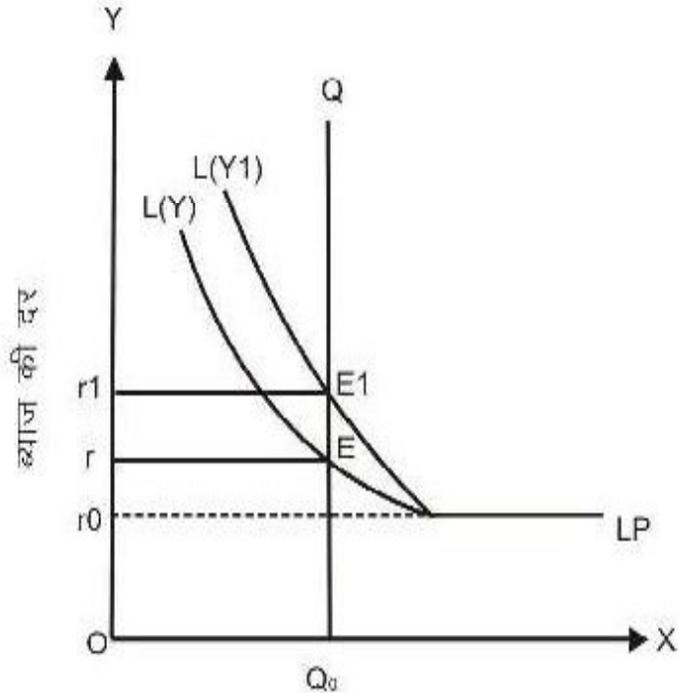
- ▶ तरलता पसन्दगी रेखा (LP Line) का आकार एवं ढाल ब्याज की दर (r) तथा सद्दा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग (L_2) द्वारा निर्धारित होती है। हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि r तथा L_2 में विपरीत सम्बन्ध कागजा जाता है जो



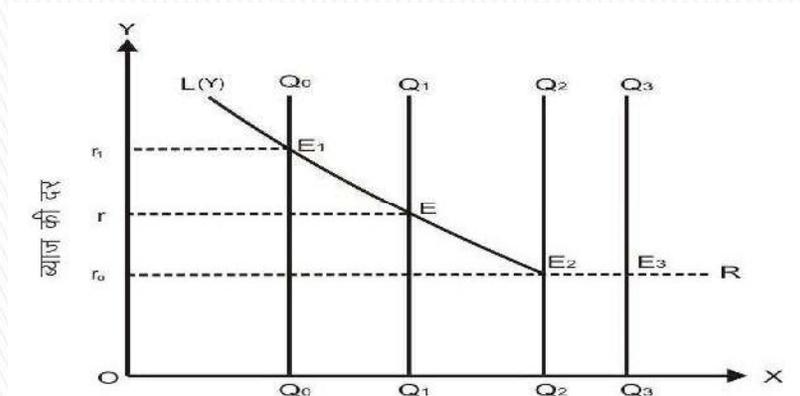
ब्याज दर का निर्धारण



ब्याज की सन्तुलन दर में परिवर्तन



आय परिवर्तन दशा में ब्याज दर निर्धारण



आलोचनायें

- ▶ **(1) वास्तविक तत्वों की उपेक्षा** - प्रो० हैजलिट का विचार है कि कीन्स ने अपने सिद्धान्त में ब्याज दर के प्रमुख निर्धारक वास्तविक तत्वों पूँजी की उत्पादकता, मितव्ययिता (अथवा बचत) आदि की उपेक्षा की है। जबकि वास्तव में ब्याज दर वास्तविक तत्वों से भी प्रभावित होती है। प्रो. वाइनर वास्तविक तत्व-बचत-की उपेक्षा को अनुचित बताते हुए लिखा है, “बिना बचत के तरलता का परित्याग नहीं हो सकता”।
- ▶ **(2) अनिर्धारणीय सिद्धान्त** - कीन्स के अनुसार ब्याज दर मुद्रा की पूर्ति एवं मुद्रा की माँग (प्रमुख रूप से सट्टा उद्देश्य) द्वारा निर्धारित होती है। यदि हम मुद्रा की पूर्ति को स्थिर मान लें तो माँग (सट्टा उद्देश्य) ज्ञात करने के लिए सौदा उद्देश्य वाली माँग अवश्य ज्ञात करनी होगी। यह माँग आय पर निर्भर करती है। आय का परिवर्तन निश्चित रूप से तरलता पसन्दगी में परिवर्तन करता है। अतः मुद्रा की माँग आय के बिना ज्ञात नहीं की जाती है अर्थात् आय के बिना ब्याज दर का पता नहीं लगा सकते हैं और ब्याज दर के बिना आय का पता नहीं लगा सकते। इस प्रकार यह सिद्धान्त हमें वृत्ताकार तर्क में फँसा देता है। अतः प्रो. हेन्सन के अनुसार कीन्स का सिद्धान्त अनिर्धारणीय है।
- ▶ **(3) असंगत सिद्धान्त** - प्रो. नाइट तथा प्रो. हैजलिट का विचार है कि कीन्स के अनुसार ब्याज दर उस समय अधिक होनी चाहिए जब तरलता पसन्दगी अधिक हो। परन्तु मन्दी के दिनों में तरलता पसन्दगी अधिक होते हुए भी ब्याज दर कम होती है।
- ▶ **(4) समय तत्व की उपेक्षा** - कीन्स का सिद्धान्त अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन ब्याज दरों में अन्तर स्पष्ट नहीं करता। इस तरह यह सिद्धान्त समय तत्व की सर्वथा उपेक्षा करता है।
- ▶ **(5) सौदा उद्देश्य माँग एवं ब्याज की दर** - कीन्स के ब्याज दर के सिद्धान्त में मुद्रा की सौदा उद्देश्य माँग को ब्याज दर से स्वतंत्र माना गया है। बामोल तथा टाबिन का कहना है कि मुद्रा की सौदा उद्देश्य माँग तथा ब्याज की दर में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। यदि बाजार में ब्याज दर अधिक हो तो हो सकता है कि कुछ लोग उपभोग पर कम व्यय करें।
- ▶ **(6) तरलता जाल** - अमेरिकन अर्थशास्त्रियों का कहना है कि अमेरिका की अर्थव्यवस्था में द्रवता फलन कभी भी पूर्णतः लोचदार होने की स्थिति न तो सैद्धान्तिक रूप से सिद्ध हुई और न ही व्यवहार में देखी गयी। जबकि कीन्स का यह मुख्य स्पष्टीकरण है।

कीन्स के सिद्धान्त की प्रतिष्ठित सिद्धान्त से श्रेष्ठता

- ▶ (1) कीन्स का सिद्धान्त एक सामान्य सिद्धान्त है। यह न्यून रोजगार सन्तुलन की स्थिति में भी लागू होता है, जबकि प्रतिष्ठित सिद्धान्त पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता पर आधारित है।
- ▶ (3) कीन्स का “तरलता जालसूत्र” मौद्रिक एवं बैंकिंग नीतियों की सीमाओं को स्पष्ट करता है। मन्दीकाल में इसके प्रभावपूर्ण न होने के कारणों को स्पष्ट करता है।
- ▶ (4) बचत एवं विनियोग में सन्तुलन ब्याज की दर के द्वारा नहीं बल्कि आय के द्वारा होता है।